

अग्र भारत

नई सोच का अखबार

www.agrabharat.in

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र



वर्षः 19 | अंकः 143 | आगरा, गुरूवार 12 नवम्बर 2026 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2.00 रू.

दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में 49 भारत के

नई दिल्ली(ए)। दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में 49 भारत के हैं। एक्यूआईडॉटइन के आंकड़ों के मुताबिक, मंगलवार सुबह 9:54 बजे राजस्थान का श्रीगंगानगर दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर रहा। यहां एक्यूआई 821 दर्ज किया गया। इस सूची में भारत के अलावा सिर्फ पाकिस्तान का लाहौर शामिल था। लाहौर 430 एक्यूआई के साथ 14वें स्थान पर रहा। वहीं, दिवाली के बाद दिल्ली से लेकर मध्य प्रदेश तक प्रदूषण गंभीर बना हुआ है। दिल्ली में मंगलवार सुबह 6 बजे चांदनी चौक का एक्यूआई 400 के पार रहा, जबकि कई इलाकों में यह 300 से ज्यादा दर्ज किया गया।

मध्य प्रदेश के भोपाल, उज्जैन और हरियाणा के बहादुरगढ़ में भी एक्यूआई 400 के पार पहुंच गया है। यूपी के नोएडा में एक्यूआई 332, बुलंदशहर में 331, गाजियाबाद में 324 दर्ज किया गया। एमपी में रात का तापमान 11 डिग्री और यूपी में 15 डिग्री तक गिर गया है। एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 201 से 300 तक होने पर हवा खराब मानी जाती है। 301 से 400 तक बहुत खराब और 401 से 500 गंभीर श्रेणी होती है। गंभीर प्रदूषण का असर स्वस्थ लोगों पर भी पड़ सकता है। तमिलनाडु के थूथुकुडी समेत कई इलाकों में लगातार बारिश हो रही है। मौसम विभाग के मुताबिक, उत्तराखंड के उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और पिथौरागढ़ में आज बारिश की संभावना है। आंध्र प्रदेश, केरल और लक्षद्वीप में तेज हवाएं चलने की संभावना है।

सुप्रीम कोर्ट ने 4 राज्यों से गाडियों के प्रदूषण पर जवाब मांगा

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में गाडियों से होने वाले प्रदूषण पर चिंता जताई है। कोर्ट ने कहा कि गाडियों से निकलने वाले धुएं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इस पर तुरंत कदम उठाने की जरूरत है। कोर्ट ने दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा सरकारों के साथ एमसीडी और दिल्ली पुलिस से जवाब मांगा है। कोर्ट ने पूछा है कि तय उम्र पूरी कर चुकी और प्रदूषण मानकों का पालन नहीं करने वाली गाडियों की एंट्री और उनके चलने पर रोक लगाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। साथ ही, ऐसी गाडियों की पहचान और जांच की व्यवस्था की जानकारी भी मांगी है। इसमें पीयूसी सर्टिफिकेट की अनिवार्यता लागू कराने के कदम शामिल हैं। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची व वी. मोहना की बेंच ने कमर्शियल और निजी गाडियों के लिए लागू नियमों और उन्हें लागू करने की व्यवस्था का ब्योरा मांगा है। खास तौर पर पड़ोसी राज्यों से दिल्ली-हष्टक्र में आने वाली गाडियों पर जानकारी देने को कहा गया है।

कोरोना का नया वेरिएंट दे रहा दस्तक

नई दिल्ली(ए)। कोरोना के साल 2020 में कहर बरपाने के बाद इसके कई वेरिएंट सामने आ चुके हैं। हाल ही में एक और नया वेरिएंट चर्चा में बना हुआ है जिसका नाम है पीजे.2.1। इस नए वेरिएंट को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बड़ा दावा किया है कि यह बिल्कुल सामान्य फ्लू जैसा है, जिसकी वजह से यह जांच कर पाना बहुत मुश्किल हो जाएगा कि यह नॉर्मल फ्लू है या कोविड-19। कोविड-19 में लगातार हो रहे म्यूटेशन के बाद अब वेरिएंट पीजे.2.1 विशेषज्ञों की चिंता बढ़ा रहा है। एसएआरएस-सीओवी-2 वायरस के दूसरे वेरिएंट्स की तरह यह भी सांस से जुड़ी समस्याएं पैदा कर सकता है। हालांकि, इसकी गंभीरता और क्लिनिकल प्रभाव के लिए अभी जीनोमिक निगरानी की जरूरत है। पर इसे लेकर दावा है कि इस पीजे.2.1 वेरिएंट से संक्रमित होने पर गले में तेज दर्द ठीक होने के बाद भी लंबे समय तक थकान रह सकती है।

केदारनाथ सहित सभी धामों के कपाट शीतकाल के लिए बंद, डोली निकली शीतकालीन गंतव्यों की ओर

देहरादून(ए)। भैयादूज के पावन अवसर पर विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ धाम के कपाट बुधवार सुबह 6 बजकर 30 मिनट पर शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए। इसी के साथ उत्तराखंड की इस वर्ष की चार धाम यात्रा भी संपन्न हो गई, जिसमें लाखों श्रद्धालुओं ने पवित्र धामों के दर्शन कर पुण्य कमाया। मंगलवार को गंगोत्री के कपाट बंद हुए थे, वहीं बुधवार को यमुनोत्री के कपाट भी विधि-विधान के साथ बंद कर दिए गए।

केदारनाथ के कपाट बंद होने की प्रक्रिया मंगलवार को ही शुरू हो गई थी, जब बाबा केदार की पंचमुखी चल विग्रह डोली को उत्सव के लिए सभा मंडप में रखा गया। बुधवार सुबह शुभ मुहूर्त में समाधि पूजा के बाद गर्भ गृह के कपाट बंद कर दिए गए, जिसके बाद मंदिर के मुख्य द्वार को भी सुबह 8 बजकर 30 मिनट पर बंद कर दिया गया। शीतकाल के अगले छह माह तक बाबा केदार के दर्शन उनके शीतकालीन प्रवास ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में होंगे। मंदिर के मुख्य पुजारी टी गंगाधर लिंग ने सभी धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए। कपाट बंद होने के बाद, सेना के बैंडों की मधुर धुन और भक्तों के जयकारों के बीच बाबा केदार की उत्सव डोली ऊखीमठ के लिए प्रस्थान कर गई, जो बुधवार रात्रि विश्राम के लिए रामपुर पहुंचेगी। वहीं, गंगोत्री धाम के कपाट मंगलवार को अन्नकूट पर्व के अवसर पर दोपहर 12 बजकर 5 मिनट पर शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए थे। इसके बाद मां गंगा की उत्सव डोली अपने शीतकालीन पड़ाव मुखीमठ (मुखबा) के लिए रवाना हुई, जो बुधवार सुबह वहां पहुंची। अब अगले छह माह तक श्रद्धालु मुखबा में ही मां गंगा के दर्शन कर सकेंगे। गंगोत्री के कपाट बंद होने की तैयारियां सुबह 9 बजे से ही शुरू हो गई थीं, जिसमें मां गंगा के मुकुट को उतारना और भोग मूर्ति के दर्शन करना शामिल था। देव डोलियों की मौजूदगी में शुभ लग्न पर कपाट बंद किए गए। डोली में सवार होकर गंगा की भोगमूर्ति मंदिर परिसर से बाहर निकली, जिसे आर्मी की टू कुमाऊं रेजिमेंट की बैंड की धुन और ढोल दमाऊ की थाप के साथ 12 बजकर 15 मिनट पर मुखबा के लिए विदा किया गया। यमुनोत्री धाम के कपाट भी बुधवार 11 नवंबर को भैया दूज के पावन पर्व पर शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए। यमुनोत्री मंदिर समिति के अनुसार, सुबह 10



बजकर 28 मिनट पर मां यमुना के कपाट बंद हुए, जिसके बाद मां यमुना की डोली अपने शीतकालीन प्रवास खरसाली के लिए रवाना हुई। इन कपाटों के बंद होने के साथ ही, उत्तराखंड में इस वर्ष की चार धाम यात्रा का औपचारिक समापन हो गया है, और अब अगले यात्रा सीजन में ही श्रद्धालु इन पवित्र धामों के दर्शन कर पाएंगे।

बंधक बनाकर दुष्कर्म किया फिर प्राइवेट पार्ट में डाला कारतूस

पटना(ए)। बिहार में महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ जघन्य अपराधों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। बेगूसराय में चार महीने पहले सामूहिक दुष्कर्म और बर्बरता का शिकार हुई एक महिला पर सोमवार रात फिर जानलेवा हमला किया गया, उसे छत से नीचे फेंक दिया गया। वहीं, रोहतास जिले में रास्ता भटकी एक नाबालिग छात्रा को बुआ के घर पहुंचाने के बहाने ऑटो चालक और उसके तीन साथियों ने सामूहिक दुष्कर्म का शिकार बनाया।

बेगूसराय के चकिया थाना क्षेत्र में हुई इस घटना में पीड़िता को गंभीर चोटें आई हैं और उसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है। पीड़िता ने बताया कि सोमवार देर रात करीब 12 बजे गांव के ही दो बदमाशों ने उसे मोबाइल पर कॉल कर बुलाया। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, बदमाशों ने उसका फोन छीन लिया और जबरन छत पर ले जाकर बालों से पकड़कर मारपीट की और नीचे फेंक दिया। वह एक बड़े बक्से (ट्रंक) पर गिरी, जिससे उसकी कमर में गंभीर चोट आई है। चार माह पहले इसी महिला को बंधक बनाकर सामूहिक दरिंदगी की गई थी और उसके प्राइवेट पार्ट में कारतूस व लकड़ी के टुकड़े डाल दिए गए थे, जो हैवानियत की इंतहा थी। पीड़िता को शक है कि इस घटना के पीछे उन आरोपितों का हाथ है जो चार माह पहले हुए सामूहिक दुष्कर्म के मामले में जेल में हैं। चकिया थाना प्रभारी गौतम कुमार ने जानकारी दी कि घटना के बाद एक आरोपित घोंघल निषाद को गिरफ्तार कर लिया गया है।

गुवाहाटी के पास रेल हादसा: इंजन समेत कई डिब्बे पटरी से उतरे

गुवाहाटी(ए)। दिगारू के पास एक बड़ा रेल हादसा हो गया। कोलकाता से सैरंग जा रही कोलकाता-सैरंग एक्सप्रेस (13125) का इंजन समेत कई डिब्बे पटरी से उतर गए। यह घटना सुबह करीब 6:54 बजे हुई, जब ट्रेन के इंजन के साथ लगभग 6 से 7 डिब्बे एक-दूसरे से टकराकर बिखर गए। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई, हालांकि अच्छी खबर यह है कि इस घटना में किसी भी यात्री के घायल होने की कोई सूचना नहीं है।

हादसे की जानकारी मिलते ही रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे। राहत और बचाव कार्य तेजी से शुरू कर दिया गया है और रेलवे ने एक रिलीफ ट्रेन भी दुर्घटनास्थल पर भेजी है। पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल और स्थानीय प्रशासन की टीमें भी घटनास्थल पर मौजूद हैं। यात्रियों को वैकल्पिक व्यवस्था कर दूसरी ट्रेन से आगे भेजा जा रहा है। रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कपिंजल किशोर शर्मा ने पुष्टि की कि अभी तक किसी हताहत की खबर नहीं है। उन्होंने बताया कि इस ट्रेन हादसे के कारण रेल यातायात पूरी तरह प्रभावित हो गया है, जिसके चलते कई ट्रेनें अपने निर्धारित समय से लेट चल रही हैं और कुछ ट्रेनों को दूसरे मार्गों पर डायवर्ट किया गया है।

प्रतापगढ़ ऐतिहासिक विरासत, क्रांतिकारी परंपरा, अनूठे राजनीतिक संघर्ष से रखता है पहचान

प्रतापगढ़,(ए)। यूपी का प्रतापगढ़ जिला अपनी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत, क्रांतिकारी परंपरा, अनूठे राजनीतिक संघर्ष और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के लिए प्रदेश में विशिष्ट स्थान रखता है। सई नदी के तट पर बसे इस शहर को मुख्य रूप से बेल्हा या बेल्हा प्रतापगढ़ के नाम से भी जाना जाता है, जिसका कारण यहां स्थित प्रसिद्ध बेल्हा देवी मंदिर है। प्रशासनिक रूप से यह प्रयागराज मंडल का अहम हिस्सा है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के मुताबिक 17वीं शताब्दी के मध्य स्थानीय राजा प्रताप सिंह ने अरौर के पास रामपुर में एक गढ़ बनवाया था। उसी किले के नाम पर इस क्षेत्र का नाम प्रतापगढ़ पड़ा। बाद में 1858 में इसे आधिकारिक रूप से एक अलग जिले का दर्जा दिया गया। प्रतापगढ़ की कुंडा तहसील के सराय नाहर राय में हुई पुरातात्विक खोजों से यह सिद्ध हुआ है कि प्रागैतिहासिक काल में भी इस क्षेत्र में मानव बस्तियां मौजूद थीं। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में प्रतापगढ़ के राजा राव रामबख्श सिंह और अन्य क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के खिलाफ लोहा लिया था। इसके अलावा यह माटी पं. जवाहर लाल नेहरू की शुरुआती राजनीतिक कर्मस्थली और महान स्वतंत्रता सेनानियों की गवाह रही है। प्रतापगढ़ के दक्षिण-पश्चिम में गंगा नदी इसे प्रयागराज और कौशांबी से अलग करती है, जबकि सई, बकुलाही, गोमती और लोनी यहां की अन्य प्रमुख नदियां हैं। जिले को भारत की आंवला राजधानी कहा जाता है।

कृष्णा नदी जल पर तेलंगाना का कड़ा रुख, रेवंत रेड्डी ने की बैठक

ट्रिब्यूनल के सामने मजबूत पक्ष रखने की तैयारी, टेलीमेट्री सिस्टम से पानी की रियल-टाइम निगरानी पर जोर

हैदराबाद,(ए)। कृष्णा नदी के पानी में तेलंगाना के हिस्से को लेकर राज्य सरकार ने अपना रुख और कड़ा कर दिया है। मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर राज्य के हिस्से को सुरक्षित करने की रणनीति पर चर्चा की। बैठक में आगामी कानूनी प्रक्रिया और कृष्णा नदी के जल बंटवारे से जुड़े मामलों में तेलंगाना का पक्ष मजबूती से रखने के लिए दस्तावेज तैयार करने पर जोर दिया गया।

बैठक ऐसे समय में हुई है जब तेलंगाना सरकार कृष्णा नदी के जल बंटवारे से जुड़े मामले में ब्रजेश कुमार ट्रिब्यूनल के समक्ष अपना पक्ष रखने की तैयारी कर रही है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से पुराने फैसलों, जल परियोजनाओं से जुड़ी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों को व्यवस्थित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य के हितों की रक्षा के लिए ठोस तथ्यों और



दस्तावेजों के साथ अपना पक्ष रखना जरूरी है।

रेवंत रेड्डी पहले भी यह मुद्दा उठाते रहे हैं कि कृष्णा बेसिन का बड़ा हिस्सा तेलंगाना में होने के बावजूद राज्य के गठन के बाद से उसे पानी का उचित हिस्सा नहीं मिला। उन्होंने कृष्णा और गोदावरी दोनों नदियों के पानी में तेलंगाना के अधिकार को लेकर कड़ा रुख अपनाने की बात कही है। बैठक में कृष्णा और गोदावरी नदी प्रबंधन बोर्ड के हस्तक्षेपों पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने जल बंटवारे का अंतिम फैसला आने तक बोर्ड के फैसलों का विरोध करने और जरूरत पड़ने पर मामला सुप्रीम कोर्ट ले जाने का सुझाव दिया। उन्होंने पानी के बहाव और उपयोग की रियल-टाइम निगरानी के लिए टेलीमेट्री सिस्टम लगाने पर भी जोर दिया।

सिंचाई विभाग को अब एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है। इसमें राज्य को अब तक हुए कथित नुकसान और जल हिस्सेदारी से जुड़े आंकड़ों को शामिल किया जाएगा। सरकार का मानना है कि यह रिपोर्ट ट्रिब्यूनल और अन्य कानूनी मंचों पर तेलंगाना का पक्ष मजबूत करने में मदद करेगी। राज्य के किसानों और कृषि क्षेत्र की पानी पर निर्भरता को देखते हुए यह मामला सरकार के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

फडणवीस ने उद्धव को दिया अपनी राजनीतिक सूझबूझ का श्रेय

मुंबई(इए)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के एक बयान ने राज्य के राजनीतिक गलियारों में अचानक हलचल मचा दी है। मुख्यमंत्री ने शिवसेना (उद्धव बालासाहब ठाकरे) के प्रमुख उद्धव ठाकरे को अपनी राजनीतिक सूझबूझ और प्रशासनिक अनुभव में विस्तार का श्रेय दिया है, जिसके बाद से अटकलों का बाजार गर्म है। एक अनौपचारिक बातचीत के दौरान, मुख्यमंत्री फडणवीस ने खुलकर स्वीकार किया कि उद्धव ठाकरे के साथ काम करने से उनके प्रशासनिक अनुभव का काफी विस्तार हुआ। उन्होंने 2014 से 2019 के बीच के उतार-चढ़ाव भरे राजनीतिक दौर को याद किया, जब भीषण सूखे और कई प्रशासनिक बाधाओं का सामना करने से उन्हें कठिन परिस्थितियों में डटे रहने की क्षमता मिली। मुख्यमंत्री ने कहा, उद्धव ठाकरे के साथ काम करने से मुझे एक बहुत बड़ा और व्यापक अनुभव मिला, जिसने मेरे नजरिए को बेहतर बनाया। मुख्यमंत्री का यह बयान ऐसे समय में आया है जब राज्य में त्योहारों का माहौल है और विरोधी गुटों के नेताओं के बीच कई अहम राजनीतिक बैठकें भी हुई हैं। राजनीतिक विश्लेषक इस बात पर बंटे हुए हैं कि फडणवीस का यह बयान कोई तंज है या सचमुच की गई तारीफ, लेकिन इसने राज्य की राजनीति में बदलते समीकरणों को लेकर अटकलों को हवा दे दी है। फडणवीस ने अपनी बात को



और विस्तार देते हुए पूर्व उपमुख्यमंत्री अजित पवार और उनकी पत्नी सुनेत्रा पवार के काम करने के अलग-अलग तरीकों की तुलना भी की, जिससे राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है। एनसीपी के संभावित विलय पर बोलते हुए, फडणवीस ने स्पष्ट किया कि अगर वे विलय करने का फैसला करते हैं, तो वे आकर हमें बताएंगे, क्योंकि हमारे बिना विलय नहीं हो सकता। अभी तक उनमें से किसी ने भी हमें कुछ नहीं बताया है। उन्होंने अजित पवार और सुनेत्रा पवार के नेतृत्व की तुलना करने से भी इनकार किया। फडणवीस ने कहा, अजित दादा एक ऐसे नेता थे जिन्हें समय की कसौटी पर परखा जा चुका था। उन्हें महाराष्ट्र की बहुत अच्छी समझ थी और राज्य के बारे में गहरी जानकारी थी। सुनेत्रा पवार अभी हालात के हिसाब से खुद को ढाल रही हैं। उनकी तुलना अजित दादा से करना सही नहीं होगा। पिछले हफ्ते विलय की चर्चाओं ने तब जोर पकड़ लिया, जब प्रफुल्ल पटेल और पार्थ पवार समेत सुनेत्रा पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के कई नेताओं ने राकांपा एसपी प्रमुख शरद पवार से मुलाकात की, जिन्हें हाल में सीने में संक्रमण के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हालांकि, विलय की इन अटकलों को दोनों ही गुटों के नेता खारिज कर रहे हैं। एनसीपी के महाराष्ट्र प्रमुख सुनील तटकरे ने हाल ही में कहा था कि अगर अजित पवार जीवित होते, तो विलय को लेकर फैसला 12 फरवरी को ही ले लिया जाता। अब तक, दोनों ही समूहों के शीर्ष नेताओं ने विलय की संभावना पर कोई पुष्टि नहीं की है, जिससे महाराष्ट्र की राजनीतिक तस्वीर अभी भी अनिश्चित बनी हुई है।

अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में जियोथर्मल ड्राइंग यूनिट का उद्घाटन, किसानों को मिलेगी बड़ी राहत

पश्चिम कामेंग (ए)। अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले के दिरांग में मंगलवार को जियोथर्मल यानी भू-तापीय ऊर्जा से संचालित ड्राइंग यूनिट का उद्घाटन किया गया। राज्य की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री दासंगलू पुल ने इस सुविधा का शुभारंभ किया। इस परियोजना का उद्देश्य किसानों की फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करना, कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और बाजार मूल्य बढ़ाना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा करना है। इस कार्यक्रम में भारत में नॉर्वे की राजदूत मे-एलिन स्टेनर, दिरांग के विधायक फुरपा त्सेरिंग और भारत, नॉर्वे तथा आइसलैंड के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ मौजूद रहे। परियोजना को केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने वित्तीय सहायता दी है, जबकि राज्य सरकार ने भी इसमें सहयोग किया है। इस यूनिट की खासियत यह है कि इसमें पृथ्वी के भीतर मौजूद प्राकृतिक गर्मी का इस्तेमाल कृषि और पशुपालन से जुड़े उत्पादों को सुखाने और सुरक्षित रखने के लिए किया जाएगा। इसके जरिए कीवी, सेब, पर्सिमन और याक के मांस जैसे स्थानीय उत्पादों को संरक्षित किया जा सकेगा। इससे किसानों को लंबे समय तक उत्पाद सुरक्षित रखने और बेहतर कीमत हासिल करने में मदद मिलेगी। मंत्री दासंगलू पुल ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान का वास्तविक लाभ तभी है, जब उसका इस्तेमाल आम लोगों और ग्रामीण समुदायों के जीवन को बेहतर बनाने में हो। उन्होंने इस परियोजना को राज्य के दूसरे उपयुक्त क्षेत्रों में भी लागू करने की उम्मीद जताई। इस दौरान उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में भूकंप के खतरे को देखते हुए स्वीकृत भूकंपीय सूक्ष्म क्षेत्रीकरण परियोजना का मंजूरी आदेश जल्द जारी करने की भी केंद्र से अपील की। गौरतलब है कि अरुणाचल प्रदेश भूकंपीय जोन-5 में आता है, जो देश का सबसे संवेदनशील भूकंप क्षेत्र है।

सीआरपीएफ हमले में बरी शख्स की थाने के करीब हत्या, कानून-व्यवस्था पर फिर उठे गंभीर सवाल

रामपुर(ईएमएस)। उत्तर प्रदेश के रामपुर में मंगलवार को मोहम्मद शरीफ की गोलियां बरसाकर हत्या कर दी गई। शरीफ वह व्यक्ति था जिसे 2007 में सीआरपीएफ ग्रुप सेंटर पर हुए हमले के मामले में सेशन कोर्ट से पहले फांसी की सजा मिली थी, लेकिन बाद में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मृत्युदंड रद्द कर दिया था। जेल से रिहा होने के बाद शरीफ खजुरिया थाने से पुलिस वेरिफिकेशन कराकर अपने बेटे के साथ बाइक से घर लौट रहा था। थाने से महज 300 मीटर की दूरी पर एक बाइक पर सवार दो नकाबपोश हमलावरों ने उसे निशाना बनाया और ताबड़तोड़ चार गोलियां दाग दीं, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

यह वारदात थाने से महज कुछ कदम दूर हुई, जिसने रामपुर में कानून-व्यवस्था और पुलिस की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। घटना के बाद खुफिया तंत्र भी अलर्ट हो गया है। इस घटना ने पुलिस की सक्रियता, गश्त और अपराधियों में कानून के खौफ को लेकर कई सवाल उठाए हैं। मृतक के बेटे मोहम्मद वाहिद ने बताया कि उनके पिता की किसी से कोई खास रंजिश नहीं थी, जिससे हत्या के पीछे का मकसद और भी गहरा गया है। परिजनों ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके अनुसार, खजुरिया थाने में तैनात एक सिपाही ने शरीफ को मंगलवार सुबह से ही कई बार फोन कर थाने बुलाया था। जब मोहम्मद शरीफ अपने पुत्र मोहम्मद वाहिद खां के साथ थाने पहुंचे तो थाना प्रभारी वहां मौजूद नहीं थे। इसके बाद वह सिपाही और एक दरोगा के समक्ष पेश होकर वापस लौट रहे थे, तभी यह घटना हुई।परिजनों ने पुलिस पर घायल शरीफ को निजी अस्पताल ले जाने से रोकने और बाद में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मृत घोषित किए जाने के बाद इसे एक योजनाबद्ध हत्या करार दिया है। उन्होंने अस्पताल में हंगामा करते हुए मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की। हमलावर रोड किनारे लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं, जिसके आधार पर पुलिस जांच कर रही है।

मोहम्मद शरीफ का नाम 2007-08 में हुए सीआरपीएफ ग्रुप सेंटर हमले के मुकदमे से जुड़ा था। सिविल लाइंस कोतवाली में दर्ज इस मामले में सेशन कोर्ट ने उसे दोषी ठहराते हुए मृत्युदंड की सजा सुनाई थी। हालांकि, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सीआरपीएफ हमले के मुकदमे से उसे बरी कर दिया था। हाईकोर्ट ने पाया था कि अभियोजन पक्ष के गवाह आरोपियों के नाम एफआईआर और धारा 161 सीआरपीसी के तहत बयान दर्ज करने के समय नहीं जानते थे।

हालांकि, आर्म्स एक्ट के मामले में उसकी दोषसिद्धि बरकरार रही थी और इस मामले में सजा पूरी करने के बाद वह करीब एक साल पहले बरेली सेंट्रल जेल से रिहा हुआ था। इस हत्याकांड ने एक बार फिर सीआरपीएफ कांड की यादें ताजा कर दी हैं। पुलिस और जांच एजेंसियां घटना के हर पहलू की बारीकी से पड़ताल कर रही हैं, जिसमें सीआरपीएफ कांड से संभावित संबंध और किसी स्थानीय रंजिश का एंगल प्रमुखता से शामिल है। इस मामले में पहले चार आर्तकियों को मौत की सजा और अन्य को उम्रकैद व दस साल की सजा सुनाई गई थी, जबकि दो आरोपियों को बरी किया गया था।